पाया किसको बैठा जाता है। घर में कोई साथ बैठे हो। यह घर का घर है, और गुरुद्वारा भी कहो इसको। गुरुद्वारा अर्थात जहाँ गुरु बैठा हो उनका दर है। तो गुरुद्वारा भी है। बाप बैठ पढ़ाते हैं। ऐसे बहुत बाप होते हैं जो बच्चों को थोड़ा रातको पढ़ाकर सिखाते हैं। यह तो वण्डरफुल घर है। बेहद का बाप भी है तो बेहद का टीचर बेहद का शान्ति भी है। बेहद का गुरु कहे तो फलौसफर भी है। सच्चा-2 ऐसा यह है। बेहद के बाप का और बच्चों का मेला होता है जरूर। इतने बच्चे पतित बने हैं उनको बाप बिना तो कौन जावे? सब बच्चे हैं और एक बाप है। यह तुम बच्चों को भासना आती है हम आत्मायें अविनाशी हैं। यह शरीर तो विनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़ कर दूसरा लेती है। बच्चे जानते हैं यह बाप एक ही बार आत्मा को पवित्र बना करके जाते हैं। चक्र का मालूम हो गया बाबा आया हुआ है। सब आत्मायें वापस जानी हैं। सतयुग में जो दैवी देवता थे वो ही आकर फिर राजभाग करेंगे। तुम्हारी बुद्धी में सारा चक्र है। मनुष्यों को यह दूरदर्शन ही। बीज से कैसे झाड़ टाल-टालियाँ निकलती हैं। कितना बड़ा झाड़ है। छोटे मठ पंथ कितने हैं। जानते हो फिर नया झाड़ बहुत छोटा होगा। मीठे पानी की नदियों के किनारे पर तुम्हारे महल होंगे, बगीचे बड़े-2 खेती होगी। तो अब स्थापना हो रही है। फिर कैसे पालना होगी। झाड़ बुद्धी को पावेगा। फिर अन्त में बाप आवेंगे। यह चक्र बुद्धी में फिरता रहे। तुम स्वदर्शन चक्रधारी और चक्र धारी बनते हो। दुनियाँ में तो कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चों की बुद्धी में है। तुमको फिर औरों को समझाना है। तुम बच्चों में भी सब की नम्बरवार बुद्धी है। जो समझदार हैं उनकी बुद्धी में सारा चक्र अच्छी रीती बैठ जाता है। हमको ऊँच ते ऊँच भगवान पढ़ाते हैं कितना बड़ा नशा है। भगवान इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। यह भी स्टूडेन्ट है। पढ़ने वाला वो है। नालेज फुल ज्ञान का सागर भी वो है। ब्रह्मा को ज्ञान सागर नही कहेंगे। खुद कहते हैं कि ब्रह्मा के तन से पढ़ाता हूँ। ब्रह्मा की आत्मा भी सुनती है। मनन करती है। तुम बच्चे हमेशा समझो शिव बाबा पढ़ाते हैं। शिव बाबा को याद करने से तुमको फायदा बहुत होगा। तुम्हारी आयु बढ़ेगी। देवताओं की आयु बड़ी होती है क्योंकि पवित्र हैं। मनुष्य भोगी अपवित्र बनते हैं तो आयु भी छोटी होती जाती है। देवताओं को योगी नही कहेंगे। हठयोगी हैं निवृती मार्ग वाले। राजयोगी हो तुम। तुम राजाई ले लेंगे बाकी सब खत्म हो जावेगा। फिर योग की दरकार नही। कृष्ण को योगेश्वर भल कहते हैं परन्तु वो है नही। उनको ईश्वर ने राजयोग सिखाया उससे पहले जन्म में। अभी बाबा आया है ले जाने। कोई भी चीज में ममत्व नही रखना है। कुछ भी नो रहेगा। नो ममत्व रहेगा। बाप कहते हैं डूबे मत। ममत्व मिटाने लिये ही कहलवाते हैं कि बाबा यह सबका आपका है था आप का ही है। सबकुछ दे देते हैं। तो कहेंगे अच्छा ट्रस्टी होकर डायरेक्शन पर चलो तो ममत्व नही रहेगा। नही तो अन्त काल जो फलानी चीज सिमरे वैसे चिन्तन में जो मरे तो वैसा ही जन्म लेना पड़े। शरीर भी याद नो पड़े। कुछ भी याद नही पड़े तबही विजय माला का दाना बन सकते हैं। ममत्व कोई में भी रखा तो फिर जन्म लेना पड़ेगा। तो भी तुम पढ़ते हो जानते हो यह नई दुनियाँ अमर लोक के लिये है। सो तो बाप शिव के बिना कोई पढ़ा नही सकते हैं। तुम्हारी प्रालब्ध होगी नई दुनियाँ में। देह सहित कोई भी चीज में ममत्व नही रखो। तो ऊँच पद पा सकेंगे। फिर और कोई को भी सिखा सकेंगे। राजा रानी बनना है तो प्रजा भी बनानी है। तुम मैसेन्जर हो। जो भी मिले उनको बताते चलो। अपने कुल का होगा तो उनको तीर लगेगा। राजधानी बहुत बड़ी बननी है। और योग बल से। तुम समझ सकते हो कि इन देवी देवताओं ने लड़ाई कर राजाई नही प्राप्त की है। तुम भी पढ़ाई से भविष्य लिये राजाई ले रहे हो। वहाँ नदियाँ आदि भी स्वच्छ होंगी। किचरा बिलकुल नही होगा। तो ऐसी राजाई में ऊँच पद पाने का पुरुषार्थ करना है। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक चाहिये। आजकल-आजकल करते-2 काल खा जावेगा। इसलिये सर्विस में लग जाना चाहिये। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करते रहो। ओम